विषय : मैं अग्नि हूँ

संहार

यह जीवन की सिलसिला अंतहीन है,
चलायमान दुनिया में मैं अकेली हूँ |
उर आया, लेकिन प्रकट न किया,
मैं एक नारी हूँ, दैवी शक्ति |
कैसे वह लोग कह दिया हम निर्लज्ज हैं ?
प्यासे लोचनों में आग उगलती हैं !
दूसरों केलिए जीना या मरना,
परंतु खुद केलिए कभी न सोचा |
क्यों मेरी संसार पर कुछ सीमा हैं?
क्यों मेरी राह पर काँटे हैं ?
सागर छलकेगा, बादल पीघलेंगा,
हम तलवार उठाते युद्ध करेगा |
न्याय में गिरी मक्खी के तरह
मैं जन्म-मृत्यु के धागे में चली,
कठोर हृदयवाले मेरी शरीर मोह किया
वह खुद कुत्तें जैसे जीभ निकलता |
परंतु, मैं इसको सहन नहीं करूँगा,
मेरी आँखों में प्रतिकार की ज्वाला !

व्यथित मौन, मैं नहीं चाहती.....
शरीर मोह करके वह मेरी बेटी को चोरा।
मैं एक माँ हूँ, एक नारी हूँ,
उसको बदला देना जरुर है।
चिंतित चितवन में रोशनी की आग,
तिमिर की सरिता मैं पार करूँगी।
कयों वह मेरी अग्नि नहीं समझता?
परंतु मैं सृष्टि हूँ, समष्टि हूँ!
सन्नाटे में काला हाथ की नजर,
चकित नहीं, बल्कि दिल में तलवार!
अहम निर्भीक, कोई ललकार स्वीकार करूँ,
यह मुसीबत तूफान में हम ज्वाला भरा।
मेरी तबाही को, मुझे प्रतिकार करूँगी,
फिक्र क्यों करे? कैसे भूलूँ?
आज मेरी बेटी स्वर्ग में रहती,
उसकी हँस-रो मैं सुनती,
पायल की स्वर, मीठी आवाज,
कंकन की चमक, आँखों में पड़ी।

सूखी, दो अदद आँखों में संहार की आग,
नाराज़!, दिल में लहरें उठती हैं।
आँसू, ओस जैसे बेमोल हो गया,
मैं उसकी अचल जड़ सामने मँडराना।
शपथ करुंगी, मैं नरसंहार करेंगी,
दर्द की सिलसिला को अंत करेंगी।
सब जगह में नारी उत्पीड़ित,
ज़रूर है परिवर्तन की ताकत।
भावना बदला, मन को उभारा,
विषाद मन में धैर्य की सार बहता।
उलझने में ऊँचे उठने की कोशिश,
हृदय में पत्थर, जिससे अग्नि उठा।
आँखों से आँसू नहीं, खून बहती,
हाथ में फूल नहीं, तलवार है।
सूखी जीभ में परिवर्तन की शक्ति,
हमें नारी, एक दैवी शक्ति है।
भविष्य बदलने में, प्रतिकार करने में
हम सा सफल है आज कौन?